जीवन ही जेल

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार

गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087

ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020

ISBN : 978-93-88781-19-0

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक

तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

JEEVAN HI JAIL (POETRY) Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,

हर उस जीव,

नदिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह क़ायनात

ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ

ममता, करुणा, स्नेह,

वात्सल्य और इन्सानियत

जो किसी भी मज़हब, धन दौलत

लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

महापुरुष ही ईश्वर	9
पानी में इन्सान	14
शर्मसार बँटवारा	18
शजर में त्रिदेव	29
सीख और सबक	33
शजर में पंच तत्व	61
जीवन ही जेल	65
जीवन एक पहेली	73
मैं कचरा हूँ	75
दलित की जुबानी	80
अजन्मी बेटियाँ	87
नदी का नाद	90

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

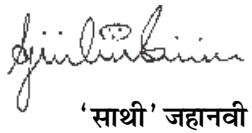

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

महापुरुष ही ईश्वर

रामायण और
रामचरित मानस
ग्रन्थों के मतानुसार
राम ईश्वर है या नहीं
यह अलग बहस
और विचार का विषय
जन मानस में हो सकता है

मगर राम ने
हमेशा अपने गुरुओं
और परिजनों का
हमेशा आदर और सत्कार
मान और सम्मान किया,
स्वयंवर में जिस धनुष को
अन्य योद्धाओं के लिये
हिलाना भी असंभव था
उस प्रतापी धनुष को
अपने पुरुषार्थ से तोड़कर
सीता से विवाह किया

और राजा राम ने
अपने माता पिता की

आज्ञा और वचन को निभाकर
राज पाट छोड़कर
चौदह वर्ष का वनवास
स्वेच्छा से स्वीकार करके
अपने माता पिता के
मान सम्मान, स्वाभिमान
और वचनों को पूरा किया

आस्था और विश्वास में
शबरी के झूठे बेर भी
ख़ुशी से प्रसन्न होकर खाये,
श्रापित अहिल्या का उद्धार कर
सम्पूर्ण नारी जाति का
सम्मान और उत्थान किया,
राम ने साधारण से
मानव केवट के साथ
समानता का व्यवहार किया

पराई स्त्रियों को कभी भी
बुरी नज़र से नहीं देखा,
घायल जटायु और अन्य
सभी जीव जन्तुओं के साथ
मानवता का व्यवहार किया,
राम ने मित्रता का
आदर्श धर्म निभाकर
मित्र सुग्रीव को बाली के
अत्याचारों से मुक्त करके
सुशासन स्थापित किया,

वन में विचरण करते समय
ऋषि मुनियों की सुरक्षा के लिये
बहुत सारे महा बलशाली
असुरों का वध किया,

रास्ता देने के लिये
सागर से विनम्र निवेदन
और सम्मान से आग्रह किया,
अपनी पत्नी सीता को
रावण के बन्धन से
मुक्त कराने के लिये
रावण से विनम्र निवेदन
और सम्मान से आग्रह करके
युद्ध में सिर्फ़ और सिर्फ़
नैतिक अस्त्रों और शस्त्रों का ही
समझदारी से उपयोग किया
ताकि निर्दोष इन्सानों को
युद्ध में जान नहीं गँवानी पड़े

रावण के शत्रु होते हुये भी
मरणासन और पराजित रावण को
उचित मान और सम्मान दिया,
लंका विजय के पश्चात
सोने की समृद्ध लंका पर
अधिग्रहण करने के बजाय
रावण के भाई विभीषण को
नेतृत्व सौंप कर लंका में
सुशासन स्थापित किया

प्रजा की भावनाओं को
सर्वोपरि समझकर
अग्नि परीक्षा दे चुकी
अपनी निर्दोष और पवित्र
गर्भवती पत्नी का भी
जनहित में त्याग कर दिया,

अपने भाइयों, परिजनों, प्रजा,
सहयोगियों, जीव जन्तुओं,
प्रजा और साथियों के प्रति
हमेशा निस्वार्थ सहयोग
और सद्भावना का
आचार और विचार रखा,

राम ने उपरोक्त सभी
पवित्र और जन मानस के लिये
उपयोगी और महत्त्वपूर्ण कार्य
ईश्वर के रूप में होकर नहीं
अपितु सामान्य इन्सान के रूप में
सहज और सरल होकर
निस्वार्थ भाव से सम्पन्न किये थे

महापुरुष किसी भी
धर्म के क्यों न हों
बिना किसी धार्मिक भेदभाव के
हम सब के लिये समान रूप से
आदर्श और मर्यादित होकर
वन्दनीय और पूजनीय हैं

राम के सम्पूर्ण जीवन से
यह निष्कर्ष निकलता है कि
राम ने कोई भी ऐसा
अधर्मी, असामाजिक
और अनैतिक कार्य
कभी भी नहीं किया

इससे यह तो
पूरी तरह से
सुबूतों के साथ
साबित होता है कि
अगर राजा राम
ईश्वर भी नहीं है तो
नि:सन्देह एक आदर्श
और नैतिक मर्यादित
महा पुरुष तो ज़रूर है
और ऐसे महा पुरुष ही
पूजनीय और आदरणीय होते हैं
और जो भी पूजनीय होते हैं
वो भी ईश्वर के समकक्ष
प्रार्थना से आराध्य ही होते हैं।

पानी में इन्सान

जल ही तो जीवन है
आज जल है तो
कल शेष जीवन है
इसलिये अनमोल
अमृत तुल्य जल की
एक एक बूँद को बचाकर
भविष्य को सँवारना है

झरने की कल कल
स्वर ध्वनियों में
जीवन की रफ़्तार
और रवानी की हलचल है
और बिना गति के
ठहरे हुये पानी में
गन्दगी का दलदल है
ऐसे ही इन्सान का
सांसारिक मोहमाया में
जकड़ना और रहना
जीवन का बन्धन है
सद्कर्मों से इन्सान का
मोक्ष के मार्ग पर
निरन्तर अग्रसर होना
मानव जीवन का सन्तुलन है

बिना किसी मक़सद
और बिना मंजिल का सफ़र
तूफ़ानी दरिया का
उफनता हुआ नाला है
ऐसे ही दिलो दिमाग़ से
भ्रमित हर एक इन्सान
दर दर भटकता हुआ
ख़ुद अपने ही हाथों से
आत्मदाह की ज्वाला है

प्यासे को पानी नहीं
बाद मरने के अमृत
बेमौसम की बारिश से
तूफ़ानी सर्द रातों में
जीवन भी विषैला है
कर्म अमृत कलश है
और निष्काम जीवन
ज़हर का प्याला है
जैसे मीठा पानी
सागर में मिलकर खारा है
वैसे ही सहज और सरल इन्सान
सबकी आँखों का
मनभावन तारा होकर
सारे जग में जन जन का
प्यारा और राजदुलारा है

बिना पानी के
सूखे और अकाल से

सम्पूर्ण संसार
भूख प्यास से बेहाल है
वैसे ही बिना इन्सानियत के
हर एक इन्सान
जीवन में बदहाल है
काली घटा के बादलों को
वक़्त पर बिना बरसे
गुज़रने का मलाल है
वैसे ही हर समर्थ इन्सान का
बेवफ़ा वक़्त से सवाल है

पानी और ज़मीन के
मामूली अन्दरूनी पोषण से
शजर की ताजा हवा
जीव जन्तुओं के लिये
जीवन रक्षक दवा है
तब जाकर शजर की
समाज में उपयोगिता से
महा दानी की हैसियत है
वैसे ही इन्सान शजर से
सीख और सबक लेकर
यह सोचे और विचारे की
समाज में उसके कर्मों से
कैसी ज़रूरत और अहमियत है

सन्तों के सतसंग से
तन और मन से
इन्सान की ऐसी संगत

जैसे चन्दन के साथ मिलकर
पानी की तासीर में
पावन सुगन्ध की रंगत

निर्मल पवित्र परमार्थ से
इन्सान का जन जन में
सम्मान और अभिनन्दन है
जैसे श्रापित और पापियों के
कष्ट हरने और निवारण में
माँ गंगा की पूजा और वन्दन है

सद्कर्मों और सद्विचारों के
रहन सहन और खान पान से
जिस इन्सान का ज़ेहन है
जन मानस के विश्वास से
मन मन्दिर की आस्था में
ऐसे निर्मल पवित्र इन्सानों का
चरणामृत के जैसा सेवन है।

शर्मसार बँटवारा

हैवानियत

बेबस इन्सानों,
बेसहारा औरतों
और मासूम बच्चों में
मौत के मातम में
ख़ौफ़ज़दा चीख पुकार है
घरों में, गलियों में,
चौराहों पर, सड़कों पर
बेबस इन्सानों, बेसहारा औरतों
और मासूम बच्चों के
बेरहमी से क़त्ल किये गये
टुकड़े टुकड़े अनगिनत
लाशें चारों तरफ पड़ी हैं
हर तरफ श्मशान के जैसा
मातम का सन्नाटा है
बँटवारें की तलवार ने
ऐसा आंतक मचाया कि
हैवानियत भी शर्मसार हो गई

शैतानियत

जिन्हें रोजगार
और मदद देकर

अपने बच्चों की तरह से
पाल पोष कर बड़ा किया
वो ही ख़ूँखार दरिन्दें बनकर
ख़ून के प्यासे हो गये
जिन्हें भाई समझकर
पवित्र राखियाँ बाँधी
वो ही हैवान बनकर
बेबस बहन बेटियों
और औरतों की अस्मत
उनके भाइयों, पतियों,
और पिताओं के सामने
सरे आम बेरहमी से लूटकर
और औरतों के अंगों को
शैतानियत से काटकर
और मासूम बच्चों को
आसमान में उछाल कर
ज़मीन पर पटककर
तड़पा तड़पाकर
अपने माता पिता के सामने
बेरहमी से मारकर
हैवानियत की हद से भी
बेशर्मी से गुज़र गये
बँटवारे के शैतान ने
ऐसा आंतक मचाया कि
शैतानियत भी शर्मसार हो गई

इन्सानियत

लाखों बेबस इन्सानों का
जबरन मज़हब बदला गया

लाखों पवित्र मन्दिरों को
तहस नहस कर दिया गया
लाखों समृद्ध घरों की
धन सम्पत्ति को लूटकर
बेरहमी से जला दिया गया
हज़ारों पानी के कुओं का
ज़हर मिला पानी पीने से
लाखों बेबस इन्सान
और मासूम बच्चे
अकाल मौत मर गये
लाखों बेबस इन्सानों
और मासूम बच्चों ने
भूख और प्यास से
तड़प तड़प कर
बेमौत दम तोड़ किया
हज़ारों लाचार औरतों ने
अपनी आबरू बचाने के लिये
बेबस होकर ख़ुदकुशी कर ली
बँटवारे की लूट,
बर्बादी और तबाही ने
ऐसा आंतक मचाया कि
इन्सानियत भी शर्मसार हो गई

क़ुदरत

लाखों जागीरदार, ज़मींदार,
सेठ साहूकार, करोड़पति व्यापारी
और दुकानदार तबाह होकर
दाने-दाने को मोहताज होकर

दिहाड़ी मेहनत मज़दूरी करने पर
मज़बूर और लाचार हो गये,
लाखों इन्सान घरों से
और रोजगार से बेघर होकर
भूखे प्यासे दर-दर भटक कर
अनाथ होकर शरणार्थी शिविरों में
भेड़ और बकरियों की तरह
रहने के लिये विवश हो गये,
लाखों बूढ़े और बुजुर्ग इन्सान,
बेसहारा औरतें, और मासूम बच्चे
अपने परिजनों से बिछड़ कर
ऐसे लापता हुये कि
उनकी लाशें भी नहीं मिली
जिनका अन्तिम संस्कार
मज़बूरी मे मरा हुआ मानकर
बिना पार्थिक देह के करना पड़ा
लाखों इन्सानों, मासूम बच्चों
और बेबस औरतों को
ज़िन्दा जला दिया गया
या ज़िन्दा दफ़्न कर दिया गया
बँटवारें की बर्बादी ने
ऐसा आंतक मचाया कि
क़ुदरत भी शर्मसार हो गई

ख़ुदा

रक्षक पुलिस और सेना ही
हत्यारी, लुटेरी, बलात्कारी हो गई
लाखों बेरहमी से कटी हुई

रक्त रंजित लावारिश लाशें
बिना दाह संस्कार के
जंगली जानवर खा गये
मज़बूरी में पानी में
बहाई गई लाशों को
पानी के जीव जन्तु खा गये
रेल और बसों में
ज़िन्दा इन्सानों के
ख़ुशहाल सफ़र के बजाय
लाखों इन्सानों की लाशों का
खौफ़ज़दा सफ़र हो गया
बँटवारे के आंतकी जुल्मों सितम ने
ऐसा बेरहम कहर ढाया की
ख़ुदा भी शर्मसार हो गया

तबाही

लाखों इन्सानों के रिश्तेदार,
भाई बहन, सगे सम्बन्धी
और धनिष्ठ यार दोस्त
इधर उधर होकर बिछुड़ गये
शर्मनाक और बेशर्म बँटवारा
भले ही कैसे भी हालातों में
कितना ही बुरा, खतरनाक,
ग़मगीन और खौफ़ज़दा ही
बदकिस्मती से क्यों न हुआ था
यदि सब्र, समझ, अमन चैन
और भाईचारा रहता तो
एक दूसरे से मिलने के

आवागन और पर्यटन से
अरबों खरबों की आय होती
मगर बँटवारे की आंतकी रंजिश
और ख़ून खराबे की नफ़रत से
ऐसी भंयकर तबाही हुई कि
ज्वालामुखी की तबाही भी
तबाही देखकर शर्मसार हो गई

नापाक़ चाल

जिस देश की बुनियाद ही
बदनियत, ख़ून खराबे, लूट,
हत्या, बलात्कार, दुर्भावना,
चालाकी, मक्कारी, ख़ुदग़र्ज़ी,
घमण्ड, चापलूसी, हैवानियत,
शैतानियत और जुल्मो सितम के
सोच और विचार से हुई हो
एक दिन उस नापाक़ देश की
ऐसी ख़तरनाक दुर्दशा होनी ही थी
बँटवारे के राक्षसी आंतक से
लाखों इन्सानों की मौत का
ऐसा महाभारत हुआ कि
महाधूर्त और कपटी शकुनी की
नापाक़ चालें भी शर्मसार हो गई

आर्थिक गुलामी

सिन्ध, गुजरात, पंजाब
और बंगाल का साधन सम्पन्न
इलाका मिल जाने के बाद

नगद पिचत्तर करोड़ की
आर्थिक मदद मिल जाने
और हमारे द्वारा छोड़ी गई
अथाह धन और सम्पत्ति
मिल जाने के बाद भी
ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत,
ग़लत नीतियों, धारणाओं
और धार्मिक उन्मादता में
आर्थिक और मानसिक रूप से
तबाह और कंगाल होकर
रोजमर्रा के जीवन यापन की
ज़रूरतों को पूरा करने के लिये
सारी दुनिया के देशों में
भीख का कटोरा लेकर
अपमानित और गिड़-गिड़ाकर
आर्थिक गुलामी के बन्धनों की
जंजीरों में तन मन से जकड़कर
भीख देने वाले देशों की
मनमानी शर्तें मानकर
अपनी इज़्जत और आबरू
मान और सम्मान को
गिरवी रखने के बावजूद भी
बहत्तर साल के बहुत बड़े
अन्तराल के बाद भी
नादान और मूर्ख को
यह समझ नहीं आता है कि
मिलजुल कर रहने
एक दूसरे का सहयोग करने

सद्भावना और सद्विचारों से
आर्थिक और मानसिक रूप से
विकसित और सम्पन्न होकर
चैन और सुक़ून से रहकर
सुखी और प्रसन्नचित
हमेशा रहा जा सकता है।

अज्ञानता

हम अथाह धन सम्पत्ति
ज़मीन जायदाद के मालिक
सिर्फ़ तन पर कपड़े रहने की हद तक
बाकि इतना सब कुछ छोड़कर
खाली हाथ आने के बावजूद भी
हम ख़ुद्दार इन्सानों ने
ईमानदारी से मेहनत मज़दूरी
व्यापार और रोजगार से
कई गुना इतना
सब कुछ प्राप्त कर लिया
जितना हम मज़बूरी में
लावारिश छोड़कर आये थे
इसलिये बँटवारे की मूर्खता से
बड़ी से बड़ी अज्ञानता भी
अज्ञानी पाक से शर्मसार हो गई

क़यामत

इस ख़ूनी बँटवारे के लिये
जो भी ज़िम्मेदार और गुनाहगार है

चाहे वो इधर के शैतान हों
या फिर उधर के हैवान हों
इन हैवान और शैतान को
उनकी बद्दुआयें ज़रूर लगेगी
जिन्होंने बँटवारे के दर्द,
जुल्मो सितम और अत्याचारों को
बेबस तड़प तड़प कर
बेरहमी से बर्दाश्त करके भुगता है
ख़ूनी बँटवारे के गुनाहगार
हैवान और शैतानों के
बहत्तर साल तो पूरे हो चुके हैं
अब सौ बरस पूरे होने वाले हैं
एक दिन इन गुनाहगारों का
नाम लेने वालों का भी कोई
नामो निशान तक नहीं रहेगा
यह हैवान और शैतान भी
उसी तरह तड़प तड़प कर
बेमौत कुत्ते की मौत मरेंगे
जैसे बँटवारे के वक़्त
लाखों इन्सानों का बेरहमी से
क़त्ले आम किया गया था
इनकी बहू और बेटियों की
इज़्जत और आबरू के साथ भी
वैसा ही सलूक किया जायेगा
जैसा बँटवारे के वक़्त
हज़ारों बेबस औरतों के साथ
बेरहमी से बलात्कार किया गया था
इनके मासूम बच्चों के साथ भी

वैसा ही सलूक किया जायेगा
जैसा बँटवारे के वक़्त
हज़ारों बेबस बच्चों के साथ
बेरहमी से किया गया था
इसलिये ख़ूनी बँटवारे के लिये
दिलो दिमाग़ की बद्दुआओं से
क़यामत भी शर्मसार होगी

जलालत

करोड़ों हिन्दू, सिख, बौद्ध,
जैन और ईसाइयों के
लाखों उपासना स्थल
वहीं पर ही रह गये
इन उपासना स्थलों पर
प्रतिदिन करोड़ों रुपयों का
चढ़वा और भेंट आती थी
अगर नासमझ और नादान
मूर्ख और अज्ञानी पाकिस्तान
शराफ़त, इन्सानियत, सद्भावना,
सहयोग की सोच समझ रखता तो
धार्मिक पर्यटन के नाम पर
और इस पर्यटन से जुड़े
बहुत सारे व्यापार और रोजगार से
हर साल अरबों रुपयों की आमदनी
बिना किसी पूँजी खर्च करके
अपने आपको आर्थिक रूप से
समृद्ध करके सम्पन्न कर सकता था
मगर महामूर्ख पाकिस्तान ने

हजारों वर्ष प्राचीन
पवित्र आराधना स्थलों को
बेरहमी और दुर्भावना से
तहस नहस और बर्बाद करके
अपने पैरों पर ख़ुद कुल्हाड़ी मारकर
अपने आपका इतना ज़्यादा
आर्थिक नुकसान कर लिया
जिसकी भरपाई करना
अब मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है
क्योंकि इन पवित्र उपासना स्थलों को
अब दुबारा बनाना नामुमक़िन है
इसलिये आंतकी बँटवारे की
नादान और बेरहम बर्बादी से
जलालत भी शर्मसार हो गई।

शजर में त्रिदेव

सादा जीवन
उच्च विचार को
तन मन से चरितार्थ
और सार्थक करने वाला
'मैं' एक सामान्य सा शजर हूँ

आदि देव महादेव

मैं शजर
जो घातक और विषैली
गैसों के ज़हर को पीकर
और नुकसानदायक,
जानलेवा और घातक
धातुओं को ज़मीन से
पोषण में ग्रहण कर
जीवन रक्षक प्राण वायु
और अमृत तुल्य जल
जीव जन्तुओं को देकर
प्रकृति के आकार रूप में
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
विष पीने वाले महादेव का
साक्षात् और साकार रूप हूँ

अगर इन्सान
इतना पढ़ा लिखा
और समझदार नहीं है
जो मेरा वैज्ञानिक महत्त्व समझे
मगर आदि अनादि काल से
महादेव को तो आस्था
और श्रद्धा से पूजता रहा है
अगर इन्सान विज्ञान की
सोच और समझ से
अन्धा, गूँगा, बहरा और अज्ञानी है तो
धर्म की सोच और समझ से
मेरे धार्मिक महत्त्व को
समझकर और मानकर ही
मेरा संरक्षण कर ले तो
इन्सान का जीवन स्वस्थ
और निरोगी होकर
तन मन की ख़ुशहाली से
स्वर्ग से भी सुन्दर हो जाये

अगर नादान इन्सान
पढ़ लिख कर भी
इतना अज्ञानी है तो
कम से कम अपने
पुरखों और पूर्वजों से ही
सीख और सबक लेकर
मेरा संरक्षण कर ले तो
इन्सान का नश्वर जीवन
सफल और आसान हो जाये

पालनहार विष्णु

मैं शजर
फल, फूल, छाया के
पालन और पोषण से
सभी जीव जन्तुओं की
भूख प्यास को शान्त कर
और स्थाई आमदनी का
रोजगार और व्यापार देकर
इस सृष्टि के पालनहार
भगवान विष्णु के अवतार में
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
साधन सम्पन्नता में
विष्णु का आकार लेकर
विष्णु का साकार रूप हूँ

वैज्ञानिकों के आर्थिक
मूल्याकंन के अनुसार
मेरे जीवन काल की
मेरी सेवाओं का मूल्य
पाँच करोड़ रुपयों से भी
ज़्यादा अनुमानित है
ऐसी मेरी आर्थिक हैसियत है
जिसे मैं जीव जन्तुओं को
स्वेच्छा और सहर्ष गुप्तदान करके
समाज में महादानी कहलाता हूँ
जबकि मैं ज़मीन से
नाकुछ मूल्य हीन
अन्दरूनी पोषण लेता हूँ

बिना धन के जीवन
नामुमक़िन तो नहीं है
मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर है
इसलिये कहते हैं कि
शजर रुपया तो नहीं है
मगर रुपयों से कम भी नहीं है

सृष्टि निर्माता ब्रह्मा

मैं शजर
जन्मदाता तो नहीं
मगर प्राण वायु का
संचार और प्रसार करके
समस्त जीव जन्तुओं के
प्राणों की रक्षा करके
जीवन का सृजन करता हूँ
जैसे भगवान ब्रह्मा
प्रकृति के समस्त
जीवों का सृजन करते हैं
उसी प्रकार मैं शजर
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
सृजन की तासीर में
ब्रह्मा का आकार लेकर
ब्रह्मा का साकार रूप हूँ।

सीख और सबक

भूगर्भ जल क्या है

धरती माँ का ख़ून पसीना,
अगर हम किसी इन्सान को
भूखा और प्यासा रखकर
दिन रात काम करवायें
और उचित पोषण नहीं दें
तो वह इन्सान थक हारकर
एक दिन अधमरा हो जायेगा
और शारीरिक मानसिक
कमजोरी से बीमार होकर
अकाल मौत मर भी जायेगा

इसी प्रकार हम
धरती माँ को जल से
पोषित करे बिना ही
अगर धरती माँ का
बेहिसाब अन्धा धुन्ध
शोषण और दोहन करेंगे तो
एक दिन धरती माँ का बदन
बोरवेल से छलनी होकर
जख़्मों से घायल हो जायेगा
और धरती माँ का कलेजा

भूकम्प और ज्वालामुखी का
विनाशकारी और विकराल रूप लेकर
जलजला बनकर फट जायेगा
जिससे समस्त जीव जन्तुओं का
जीवन तहस नहस हो जायेगा

खनिज क्या है

धरती माँ के हाड़ माँस
अगर हम किसी इन्सान से
उसकी कार्य क्षमता की तुलना में
उससे बहुत अधिक काम
करवा कर शोषण करेंगे तो
वह इन्सान एक दिन
कमजोर और बीमार होकर
समय से पहले जर्जर होकर
अकाल मौत मर जायेगा

उसी प्रकार धरती माँ को भी
उचित पोषण करे बिना
खनिजों का अन्धा धुन्ध
अनुचित दोहन करके
धरती माँ का शोषण करेंगे तो
धरती माँ का तन
और मन जख़्मी होकर
धरती माँ का ख़ूबसूरत
हसीन और प्राकृतिक बदन
बदसूरत और भयानक हो जायेगा
जिससे सुन्दर और हसीन प्रकृति

तहस नहस होकर उजड़ जायेगी
और प्रकृति के सभी जीव जन्तुओं का
सम्पूर्ण जीवन नष्ट हो जायेगा

पेड़ पौधे क्या हैं

धरती माँ की सन्तानें
जैसे माँ अपनी सन्तान को
नौ महीने गर्भ में रख
अपने शरीर से पोषित करती है
और अपनी सन्तान को
जन्म देने के बाद भी
ममता और करूणा में
तन मन से आनन्दित होकर
अपने आँचल से दूध पिलाकर
खान पान और रहन सहन से
पाल पोषकर बड़ा करती है

वैसे ही धरती माँ भी
अपने पोषण से
पेड़ पौधों की जड़ों को
पानी और मिट्टी की
अन्दरूनी ख़ुराक देकर
हरा भरा करके विशाल करती है
जिससे सभी जीव जन्तुओं को
प्राण वायु, शीतल छाया,
जीवन रक्षक औषधियाँ
और फल फूल मिलते हैं
ताकि सभी प्रकार के

जीव जन्तु ज़िन्दा रहकर
सुरक्षित और सन्तुलित रह सके

आहार क्या है

अन्न, दाले, फल-फूल,
जड़ी बूटियाँ, सूखे मेवे
और औषधियाँ क्या हैं
पेड़ और पौधों द्वारा
हमें उपहार में
प्रदान किये जाने वाले
अनमोल रत्न हैं
इनके बिना हमारा जीवन
मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है
इन अनमोल रत्नों से
जीव जन्तुओं का जीवन
ख़ुशहाल और सुरक्षित रहता है

वायु क्या है

पेड़ों की अन्तर आत्मा
जो साँसे और धड़कन बनकर
जीव और जन्तुओं के
प्राणों का संचार करती है
प्राण वायु के बिना
जीव और जन्तुओं का
एक पल भी जीना
इस संसार में असम्भव है

छाया क्या है

पेड़ों की ममता, स्नेह
और करूणा का आँचल
जैसे जीव जन्तुओं के बच्चे
माँ के आँचल और गोद में
आरामदायक, सुरक्षित, सुखी
और प्रसन्नचित रहते हैं
वैसे ही पेड़ अपने आँचल में
ममता की शीतल छाया से
समस्त जीव और जन्तुओं को
ख़ुशहाल और निरोगी रखते हैं

लकड़ियाँ क्या है

पेड़ों के बदन की
हड्डियाँ और हाथ पैर
जो जीव जन्तुओं के
जीवन को सुचारू रूप से
संचालित करने के लिये
अतिआवश्यक वस्तुयें
बनाने के काम आती हैं
लकड़ियाँ ख़ुद जलकर
जीव और जन्तुओं को
ऊर्जा और उष्मा प्रदान करती है
जिससे जीव और जन्तुओं के
जीवन में गति आती है
अन्यथा बिना गति के
जीव और जन्तुओं का जीवन
ज़िन्दा मुर्दे के समान है

रेत क्या है

बड़े-बड़े पहाड़ों
और पत्थरों के
आपस में टकराकर
या फिर घिसकर
पहाड़ों और पत्थरों के
छोटे-छोटे कण
जब बड़े-बड़े
पहाड़ों और पत्थरों की
ये दयनीय हालात है तो
अदने से नश्वर इन्सान की
क्या और कैसी औक़ात है
फिर क्यों इन्सान
इस भ्रम और घमण्ड में
सर्व शक्तिमान बनकर रहता है कि
मैं ही इस संसार में
सब कुछ करने वाला हूँ

जब बड़े-बड़े
पहाड़ों और पत्थरों के
छोटे-छोटे कण
रेत का आकार लेकर
पत्थर, चूने और सीमेन्ट के
साथ मज़बूती से मिलकर
फिर से विशाल इमारत बन जाते है

इन्सान भी तो
समाज रूपी पत्थरों

धर्म रूपी पहाड़ों के
छोटे-छोटे कण ही तो हैं
फिर क्यों नहीं इन्सान
रेत से सीख और सबक लेकर
सद्भावनाओं के सीमेन्ट
भाईचारे और प्यार के चूने
सहयोग और शराफ़त के पानी से
इन्सानियत का मिश्रण बनकर
मज़बूत, विशाल, सुन्दर,
विकसित और संस्कारी
समाज और देश रूपी
भव्य और आकर्षक इमारत का
देश के हित में ख़ूबसूरत निर्माण
फिर क्यों नहीं इन्सान करता है

समन्दर क्या है

बहुत सारी छोटी-छोटी
नदियों के पानी से
एक एक बूंद का वजूद
जब बूंद अपना वजूद
अपने आप खत्म करके
एक एक बून्द संग्रहित होकर
विशाल समन्दर का
रूप ले सकती है तो

फिर क्यों नहीं इन्सान
बूंद से सबक
और सीख लेकर

अपने निजी हित
और स्वार्थ त्याग कर
देश और समाज हित में
हिल मिलकर और मिल जुलकर
ख़ुशहाल और संगठित
देश और समाज का
निर्माण क्यों नहीं करते हैं

ज़िन्दगी क्या है

अधूरी ख़्वाहिशें
और ख़्वाबों के
पूरा नहीं होने के
अफ़सोस और मलाल से
मृगतृष्णा और मोहमाया में
इन्सान का जकड़कर
एक दिन मर जाना

फिर क्यों नहीं इन्सान
ज़िन्दगी से सीख
और सबक लेकर
अपनी जायज़ ज़रूरतों को
मेहनत और ईमानदारी की
जायज़ कमाई से पूरा करके
तन मन से सन्तुष्ट होकर
सहज, सरल और निर्मल होकर
फिर क्यों नहीं इन्सान
आसान ज़िन्दगी को जीता है

लकड़ी क्या है

इन्सान की बहुत सारी
जायज़ और नाजायज़
ज़रूरतें पूरी करने के लिये
पेड़ का अंग और देहदान

लकड़ी जलकर
अपना वजूद मिटाकर
जीव और जन्तुओं को
ऊर्जा और उष्मा देती है
जिससे जीवन में गति आती है
अन्यथा बिना गति के जीवन
ज़िन्दा मुर्दे के समान है

इन्सान के लिये लकड़ी
क़ीमती और सुन्दर फर्नीचर
और सजावट के सामान
बहुत सारे घरेलू कार्य के लिये
बहुउपयोगी सामान देती है

तो फिर क्यों नहीं इन्सान
लकड़ी से सीख
और सबक लेकर
देश और समाज के लिये
अपनी यथा योग्य
क्षमता के अनुसार
योगदान क्यों नहीं करता है

पेड़ क्या है

फल, फूल, छाया,
हवा, पानी, हरियाली,
और औषधियों के रूप में
अपनी अनमोल विरासत
और सम्पत्तियों का
गुप्त दान करके
संसार और प्रकृति में
सन्तुलन और सुन्दरता रखकर
इन्सान की ख़ुशहाली में
पेड़ के समस्त जीवन का
अनमोल गुप्त दान
और गुप्त दान ही
समाज में मान और सम्मान से
महादान समझा और माना जाता है

फिर क्यों नहीं इन्सान
महा दानी पेड़ से
सीख और सबक लेकर
अपनी सेवाओं और सम्पत्ति को
देश और समाज हित में
ज़रूरतमन्द के लिये उपयोगी कर
देश और समाज को
ख़ुशहाल क्यों नहीं करता है

वैसे भी आदि अनादि काल से
यही परम सत्य है कि
बटोरने वाला अमर नहीं हुआ है

दुनिया देने वाले को ही
हमेशा याद करती है
लेने वाले को नहीं

आस्था क्या है

भक्ति और तीर्थ
यात्रायें क्या है
आस्था में ऐसी प्रार्थनायें
और कष्टप्रद यात्रायों में
बहुमूल्य समय की बर्बादी
जो बिना कर्म किये
मन्नतें पूरी करने
और अनहोनी के
बुरे वक़्त की मुसीबत से
बचने के लिये की जाती है

वैसे तो कोई भी घटना
अनहोनी नहीं होती है
सारी घटनायें कर्म के
फल से निर्धारित होती है
और न ही कर्महीन भक्ति में
कोई भी शक्ति होती है

इसलिये कर्म ही पूजा है
और हर एक इन्सान को
अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल
एक दिन ज़रूर मिलता है
इसलिये इन्सान को

अच्छे और मन माफ़िक
फल प्राप्त करने के लिये
दीन और ईमान से
सद्भावना और सहयोग से
मेहनत और ईमानदारी से
अपने तन और मन को
सहज, सरल और निर्मल करके
निस्वार्थ भाव और भावना से
बिना किसी फल की इच्छा के
अच्छे कर्म करते रहना चाहिये
ताकि सभी इन्सानों को
सदैव अच्छे फल मिलते रहें
यही सीख और सबक
हमें कर्म ही पूजा है के
सिद्धान्त से मिलती है

ईश्वर क्या है

अदृश्य शक्ति का
एक ऐसा डर
जो इन्सानों को
कुछ हद तक बुरे कर्म
करने से रोकता है
ताकि हम स्वर्ग में जा सकें
जब डरकर ही हमें
ईश्वर को मानना है
तो ऐसे ईश्वर का क्या फ़ायदा

किसान क्या है

ऐसा अन्नदाता
जो क़र्ज़, क़ुदरत
और सरकार के प्रकोप से
ईमानदारी से मेहनत करके
बदहाली में बेबस होकर
अभावों में जीकर
दाने-दाने को मोहताज है
जो दिन और रात ख़ाक में रहकर
एक दिन वक़्त से पहले
हमेशा के लिए ख़ाक में मिल जाता है

सच क्या है

हर एक वह घटना
और हर एक वह वाक्या
जिसे देख और सुनकर
जिससे सच्चे इन्सान
हैरान और परेशान होते हैं
क्योंकि सच्चाई का रंग
सफेद और उजला होता है
और झूठ का रंग काला
वैसे भी काले रंग पर
सफेद रंग चढ़ाना
बहुत मुश्क़िल होता है
इसलिये हर सफेद झूठ
सच ही तो होता है

सम्मान क्या है

मान का ऐसा अभिमान
जिसमें सम्मान
ख़ुद एक अपमान है
जिसमें अभिमान रूपी
ज़हर के घूँट
सम्मान के लिये
मान से पीने पड़ते हैं

किस्मत क्या है

ऐसे वक़्त और हालात
जहाँ पर मेहनत और लगन
इस उम्मीद और आशा में
एक दिन परेशान होकर
हताश और निराश हो जाती है
क्योंकि जब ख़ुदा मेहरबान होता है तो
गधा भी पहलवान होता है
इसलिये कितने ही कर्म
मेहनत से इन्सान करले
इन्सान को वक़्त से पहले
और किस्मत से ज़्यादा
कभी भी नहीं मिलता है
यही कर्म फल की नियति है

इन्सान क्या है

ईश्वर की ऐसी अद्भुद रचना
जो प्रकृति का सबसे

सुन्दर और बुद्धिमान जीव है
जिसने प्रकृति का सबसे
ज़्यादा सत्यानाश किया है
उतना किसी ने नहीं किया है
जो ख़ुदग़र्ज़ी और मक्कारी में
गिरगिट की तरह रंग बदलता है
जो अपनी मनमाफ़िक दलीलों से
नाजायज़ को जायज़
और जायज़ का नाजायज़
जो अनैतिक को नैतिक
और नैतिक को अनैतिक
अपनी सुख सुविधा के लिये
मनमर्जी से परिभाषित करता है

रिश्वत क्या है

जायज़ को जायज़ करने
जायज़ को नाजायज़ करने
और नाजायज़ को
जायज़ करने के लिये
कभी स्वेच्छा से
तो कभी ज़बरदस्ती से
दिया जाने वाला
अघोषित सुविधा शुल्क
जो लगभग क़ानून द्वारा
सेवा की शर्तों के लिये
निर्धारित जैसा ही होता है

पति क्या है

कभी सम्मानित दहेज देकर
कभी अपमानित दहेज देकर
विवाह रूपी उचित, अनुचित
और प्रचलित व्यापारिक
और सामाजिक लेन देन में
खरीदा हुआ बन्धुआ मज़दूर

या फिर एक औरत
एक आदमी को
अपना आदमी
नहीं मान लेती है
तब तक एक आदमी
आदमी नहीं होता है
भले ही वह आदमी
कितना ही अमीर,
सुन्दर और ताक़तवर
और सम्मानित ही क्यों न हो
या फिर आदमी
औरत के साथ
औरत बनकर रहे
तभी वह सही मायने में
सम्पूर्ण और ख़ुशहाल पुरुष है

माँ क्या है

ममता, करूणा,
सहजता, सरलता,
दया, इन्सानियत,

सद्भावना, सहनशीलता,
स्नेह और वात्सल्य की
एक ऐसी पवित्र
और निर्मल देवी
जो बिना किसी
धार्मिक भेदभाव के
किसी की भी सन्तान का
पालन पोषण करती है
जिसके श्री चरण
स्वर्ग से भी सुन्दर है
जहाँ पर सर्वशक्तिमान
परमपिता परमेश्वर
मान सम्मान से निवास करता है

इसलिये स्वयं ईश्वर ने
यह कहा है कि
जहाँ पर मैं
उपस्थित नहीं हो पाता हूँ
मेरे प्रतिनिधि के रूप में
वहाँ पर माँ होती है

पानी क्या है

बिना रंग का
एक ऐसा तरल पदार्थ
जिसके बिना ज़िन्दगी के
सारे रंग अधूरे हैं
यानि प्रकृति के
सभी जीव-जन्तुओं
और पेड़ पौधों का जीवन

पानी के बिना
मुश्क़िल ही नहीं
नामुमक़िन है
इसलिये ख़ूबसूरत
सतरंगी इन्द्रधनुष
पानी से ही तो बनता है

नारी क्या है

सहजता, सरलता,
निर्मलता, पवित्रता,
ममता, करूणा, स्नेह,
प्यार, वात्सल्य, दया,
परमार्थ, पुरुषार्थ
और सहनशीलता के
उपकरण से बनी
इन्सानियत की हमदर्द
ऐसी दैवीय स्वरूप
अर्न्तआत्मा से स्वचालित मशीन
जो बिना किसी रख रखाव के
बिना थके और बिना रुके
बिना खराब हुये सारे संसार
और परिवार को सन्तुलित
और व्यवस्थित रखती है
यानि आधी दुनिया के बिना
सारी दुनिया अधूरी है

मौत क्या है

ज़िन्दगी की
अन्तिम सत्य घटना

जिसका जन्म के समय ही
घटित होना निश्चित है
फिर भी हर इन्सान
कभी नहीं मरकर
अमर होने के लिये
डर-डर कर जीता है
मौत कितनी ग़मगीन
और ख़ौफ़ज़दा होगी
यह ज़िन्दगी के
पाप और पुण्य के
प्रतिफल पर निर्भर करती है
ऐसी समाज में मान्यता है
इसलिये इन्सान
कुछ हद तक
बुरे कर्म करने से
पहले सोचता और डरता है
क्योंकि हर एक इन्सान
स्वर्ग में जाना चाहता है

राजनीति क्या है

किसी भी कीमत पर
सत्ता प्राप्त करने की
ऐसी चाणक्य नीति
जिसमें गैर क़ानूनी
और नाजायज़ भी
क़ानूनन जायज़ हो जाता है
ख़ुदग़र्ज़ी की राजनीति के लिये,
ख़ून के रिश्तों को भी

बेरहमी से मारना पड़ता है,
गहरी दोस्ती को भी
दाँव पर लगाना पड़ता है,
भाई भाई भी एक दूसरे के
ख़ून के प्यासे हो जाते हैं,
पति पत्नी और बाप बेटे भी
एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं,
अपने स्वार्थ के लिये देश से
गद्दारी भी करनी पड़ती है,
भोली भाली मासूम
और बेबस जनता को भी
मूर्ख बनाना पड़ता है,
जातिवाद, भाई भतीजावाद,
आतंकवाद और मज़हब का ज़हर
भाईचारे के प्यार और मिठास में
सम्प्रदाय का ख़ून खराबा करके
रंजिश और नफ़रत से मिलाया जाता है

लोकतन्त्र क्या है

जाति और मज़हब,
धनबल और बाहूबल की
तानाशाही और मनमानी से
साम्प्रदायिक भीड़ का ऐसा तंत्र
जिसमें संख्याओं का ही
वजूद और अहमियत होती है
जिसमें देशहित के मुद्दे
और सामाजिक चरित्र के मूल्य
अर्थहीन और गायब होते हैं

जिसमें सिर्फ़ और सिर्फ़
नेताओं के नफ़ा नुकसान
और नाजायज़ स्वार्थ के लिये
बहुत कुछ ग़लत भी
सही और उचित होता है
जिसमें भोली भाली
मासूम जनता का शासन
बेबस और लाचार जनता पर
चालाकी और मक्कारी की
कूटनीति से किया जाता है

बेटी क्या है

लिंग परिक्षण से
दुर्भाग्य से गर्भ में
नहीं पहचाने गये
ऐसे बदनसीब जीव का जन्म
जिसका जन्म अपशगुन होता है
जिसके पालन पोषण में
भेदभाव और असमानता है
जिसके रहन सहन
और चाल चलन से
ज़िन्दगी की दिनचर्या
ग़मगीन और खौफ़ज़दा है
जो ज़माने के बेरहम
और बिना मतलब के
रस्मों और रिवाज़ों के
दलदल में फँस कर
हैरान और परेशान है

जो ससुराल के
अघोषित क़ैदखाने में
दहेज की जंजीरों से
लोभ लालच में जकड़कर
फाँसी के फन्दे पर लटक कर
ख़ुदकुशी से मौत को
अपने गले का हार बनाती है
जिसकी चिन्ता में हर रोज
पिता चिता बनकर जलता है

मुहब्बत क्या है

चाहत और क़शिश से
ख़्वाबों और ख़यालों से
विरह की व्याकुल वेदना में
मिलन की आरजू लेकर
बेक़रार और मज़बूर होकर
दो बेबस दिलों की
दो बदन एक जान होने में
ऐसी मंजिल की तलाश
जहाँ पर ज़मीन
और आसमान मिलते हैं
जिसके ख़ौफ़नाक सफ़र में
तन्हाई, जुदाई, रूसवाई,
ग़म, बदनामी, बेवफ़ाई,
बदहाली और बेआबरू,
बेरहम ज़माने के जालिम
रस्मों और रिवाज़ों के
घने और अन्धेरे जंगल
ख़ौफ़ज़दा बनकर आबाद हैं

पति पत्नी क्या है

पानी जैसे निर्मल रिश्ते में
उफनती दरिया के
बिना पतवार और
बिना क़श्ती के
दो अलग किनारे
या फिर रेल की
दो समानान्तर पटरियाँ
जो तमाम उम्र
रहती तो साथ साथ हैं
मगर सारे जीवन में
मिलती कभी भी नहीं
दरिया और रेल के
जीवन भर के सफ़र में
उम्र भर का साथ तो होता है
मगर जीवन साथी होना
नामुमक़िन की तरह
मुमक़िन जैसा ही होता है
या फिर गृहस्थ जीवन की
उम्र क़ैद की सज़ा में
रस्मों और रिवाज़ों की
बेड़ियों में जकड़कर
मनमुटाव और भेदभाव में
बेमन से बेबस होकर
एक साथ रहने के लिये
तन और मन से
मज़बूर हैं

विवाह क्या है

तमामउम्र के लिये
सांसारिक मोहमाया में
जकड़ने का सरल मार्ग
जिसमें दुनियादारी निभाने में
अपने पुरुषार्थ को धीरे धीरे ख़त्म करके
अपने सार्थक मनुष्य जीवन को
बिना किसी उद्देश्य के
बेकार और बर्बाद करना है
या फिर आदि अनादि काल से
एक पिता के बदले की भावना
जो हर पिता द्वारा किये गये
जुर्म और अन्याय के खिलाफ़
एक बेबस जख़्मी पिता का
अपने बेटे से अपने पिता
द्वारा लिया गया बदला
भले ही बेटा
कितना ही नालायक
और बेग़ुनाह क्यों न हो

चुनाव क्या है

भाई भतीजावाद,
परिवारवाद, जातिवाद
और मज़हब के पिटारे में से
नागनाथ और सर्पनाथ में से
किसी एक कम जहरीले नाथ का
बेबस जनता का लोकतांत्रिक चयन

पत्नी क्या है

ऐसी मानसिक प्रताड़ना की
दिन और रात अहिंसक हिंसा
जिसके बारे में लिखना
किसी भी खतरे से खाली नहीं है
विद्वानों द्वारा पत्नी की तुलना
ज़हरीली विधवा नागिन
और खतरनाक जख़्मी शेरनी के
बदले की दुर्भावना से की गई है
जिसके प्रतिशोध के प्रकोप से
पति रूपी पुरुष का बचना
मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है
जो ज़ुबान के तीर तलवारों से
ऐसे खतरनाक जानलेवा
अहिंसक हमले करती है कि
तोप के गोलों के प्रहार से
बच जाना तो मुमक़िन है
मगर पत्नी के शब्द बाणों
और ज़ुबान रूपी तोप के गोलों से
गृहस्थ जीवन में बचना नामुमक़िन है
पत्नी के मगरमच्छ रूपी आँसू
किसी ब्रह्मास्त्र से कम नहीं होते हैं
जिससे पति रूपी पुरुष का
तन मन और दिलो दिमाग़ से
बेमौत मरना निश्चित ही है
बिना बात और बिना वज़ह से
रूठी हुई पत्नी को मनाना
बेचारे बेबस अपमानित पति का

मानसिक सन्तुलन खोकर
पाग़ल हो जाने से कम नहीं है
पत्नी के मायके वाले
अनपढ़ और गँवार भी
पढ़े लिखे सभ्य और संस्कारी होते हैं
और ससुराल वाले
पढ़े लिखे सभ्य और संस्कारी भी
अनपढ़ और गँवार होते हैं
पत्नी के पास कपड़ों की
पूरी दुकान होते हुये भी
घर में पहनने के लिये
साधारण कपड़े भी नहीं होते हैं
पति से हर बात पर नोंक झोंक
और पति के हर काम में
कमियाँ और ग़लतियाँ निकालना
हर मूर्ख समझदार पत्नी का
मूलभूत अधिकार होता है
फिर भी हर झगड़ालू पत्नी
सुशील, सभ्य, समझदार, संस्कारी, आज्ञाकारी
और गृहकार्य में दक्ष ही होती है

कर्म क्या है

मेहनत और ईमानदारी के
पुरुषार्थ के फल को
सामान्यत: कर्म कहते हैं
शास्त्रों में कर्म को
ईश्वर की पूजा से भी
बढ़कर माना गया है

कर्म अक्सर किस्मत,
जातिवाद, भाई भतीजावाद
और धन-दौलत के आगे
हताशा में नतमस्तक होकर
हैरान और परेशान रहता है
इस हैरानी की वज़ह से कर्म
हीन भावना से ग्रसित होकर
बुरे कर्म और नशे की लत में
जीवन और भविष्य तबाह कर
अपनी जीवन लीला को भी
ख़ुदकुशी से समाप्त कर लेता है

धर्म क्या है

रस्मों और रिवाज़ों
आस्था और विश्वास में
नासमझ इन्सानों का
ऐसा विशाल जन समूह
जो विभिन्न जातियों के
समुदाय में बँटा रहता है
जिसे कुछ शातिर इन्सान
अपने फ़ायदे के लिये
सिर्फ़ एकत्रित करने की
बनावटी कोशिश करते हैं
ताकि अनेकता में अनेकता की
सिर्फ़ एकता दिखती रहे
यानि एकता बनी नहीं रहे

अदालत क्या है

झूठे सबूतों और गवाहों के
फ़र्जी और नक़ली दस्तावेजों से
शातिर और चालाक वकीलों की
बेमतलब की बहस
और नापाक़ दलीलों
और लोभ लालच से
न्याय के देवता को गुमराह,
बेबस और लाचार कर
सच और हक़ीकत को
नियमों और क़ानूनों से
झूठा साबित करके
न्याय पर अन्याय की विजय से
न्याय के देवता का ऐसा मन्दिर
जिसमें हैवान और शैतान
अन्याय की शक्तिशाली
प्रेत आत्मा निवास करती है

शिक्षा क्या है

बिना रोजगार
और बिना संस्कारों के
देश के युवा भविष्य के
बेरोजगारी के दलदल में
फँसने की ऐसी प्रणाली
जिसमें सामान्य ज्ञान
और सामाजिक विज्ञान से
शारीरिक और मानसिक
नैतिक चरित्र का
तन मन में नितान्त अभाव है।

शजर में पंच तत्व

अग्नि देव

मेरा तना और शाखायें
लकड़ियों का रूप लेकर
आदि अनादि काल से जलकर
ऊर्जा और उष्मा का स्रोत हैं
ऊर्जा और उष्मा से ही
जीवन में गति आती है
अन्यथा बिना गति के जीवन
ज़िन्दा मुर्दे के समान है
इसलिये मैं शजर
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
ऊर्जा और उष्मा की तासीर में
अग्नि देव का आकार लेकर
अग्नि देव का साकार रूप हूँ

वायु देव

बिना प्राण वायु के
किसी भी जीव का
जीवन सम्भव नहीं है
मेरी पत्तियों से ही

प्राण वायु का प्रसार,
निर्माण और संचार होता है
जिससे ही सभी जीवों में
जीवन मुमक़िन होता है
इसलिये मैं शजर
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
जीवन्त जीवन की तासीर में
वायु देव का आकार लेकर
वायु देव का साकार रूप हूँ

जल देव

पानी के वाष्पिकरण
और बादलों से अमृत तुल्य
पानी का बरसना भी
काफी हद तक
मेरे उपर ही निर्भर है
जल ही तो जीवन है
आज जल है तो
कल शेष जीवन है
बिना पानी के
जीवन मुमक़िन नहीं है
इसलिये तो मैं शजर
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
अनमोल और अमृत तुल्य
जल ही जीवन की तासीर में

जल देव का आकार लेकर
जल देव का साकार रूप हूँ

पृथ्वी देव

बाढ़ के तूफानी पानी से
मिट्टी के कटाव से बचाव
और ज़हरीली गैसों
घातक और नुकसानदायक
धातुओं से ज़मीन के
पोषण और उपजाऊ क्षमता की
रक्षा भी तो मैं ही करता हूँ
इसलिये तो मैं शजर
आदि अनादि काल के
शाश्वत प्रमाणों से
अनमोल और पूजनीय
धरती माता की तासीर में
पृथ्वी देव का आकार लेकर
पृथ्वी देव का साकार रूप हूँ

आकाश देव

अपनी शीतल छाया
और ख़ूबसूरत हरियाली से
मन और मस्तिष्क को
सहज, सरल, निर्मल,
पवित्र, सहनशील, सुगम,
चैन और सुक़ून से
बुद्वि का विकास कर

सम्पूर्ण जीवन को
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् करता हूँ
इसलिये तो मैं शजर
आदि अनादि काल से
शाश्वत प्रमाणों से
निर्मल ज्ञान की तासीर में
आकाश देव का आकार लेकर
आकाश देव का साकार रूप हूँ।

जीवन ही जेल

बचपन में क़ैद

इन्सान भ्रूण के रूप में
माँ की कोख में क़ैद है
पैदा होने के बाद
माँ के आँचल में क़ैद है
थोड़ा बड़ा होने पर
परिजनों, रिश्तेदारों
और माता पिता की
हिदायतों में क़ैद है
उसके बाद छात्र जीवन में
शिक्षकों के निर्देश, किताबों
और स्कूल में क़ैद है
तो फिर हर एक इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

यौवन में क़ैद

यौवन काल में
कॉलेज की पढ़ाई,
टी.वी. मोबाईल, दोस्त
और भविष्य निर्माण के
सपनों की चिन्ताओं में क़ैद है

युवा अवस्था में रोजगार,
नौकरी और व्यापार की
ज़न्जीरों में क़ैद है
या फिर बेरोजगारी के
गहरे दलदल में क़ैद है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

जवानी में क़ैद

सात वचनों के बन्धनों से
तमाम उम्र के लिये
गृहस्थ जीवन में क़ैद है
अपने मकान का
ख़ुद मालिक होते हुये भी
घर की चारदीवारी में
सांसारिक मोहमाया के
बन्धन में वशीभूत होकर
सुख सुविधाओं के लिये क़ैद है
उम्मीदों और आशाओं में
जीवन साथी, बच्चों, मित्रों,
परिवार जनों, रिश्तेदारों,
पड़ोसियों की नज़रों से
अपेक्षाओं, अभिलाषाओं,
ख़्वाहिशों और मन्नतों में क़ैद है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन

एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

रोजगार में क़ैद

कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों से
सरकार, नियम, क़ानून, पुलिस
और प्रशासन की अपेक्षाओं में
देश के संविधान के अर्न्तगत
विभिन्न धाराओं से क़ैद हैं
बेबस सरकारी कर्मचारी
समय के पाबन्द होकर
सरकार के अधीन क़ैद हैं
लाचार निजी कर्मचारी
कार्यक्षमता के प्रदर्शन से
दौलतमन्द मालिकों के अन्तर्गत
गुलामी की ज़न्जीरों में क़ैद हैं
मज़बूर दिहाड़ी मज़दूर
दो वक़्त की रोजी रोटी के
जुगाड़ की चिन्ताओं में क़ैद हैं
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

उम्मीदों में क़ैद

हर एक सफल इन्सान
असफलता के डर में

बेबस और लाचार होकर
हताशा और निराशा में
हैरान और परेशान होकर
आशा और उम्मीद की
रोशनी की किरण में
भविष्य की अनिश्चताओं में
हर रोज तमाम उम्रक़ैद है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

दौलत में क़ैद

ग़रीब जीवन यापन की
ज़रूरी आवश्यकताओं को
महज़ पूरा करने के लिये
मेहनत और ईमानदारी से
दिहाड़ी मज़दूरी करने में क़ैद है
धनवान धन के
चोरी होने के डर
और दौलत के कम होने के
ग़म, दुख और मलाल में
कंजूस बनकर तिजोरी में क़ैद है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

क़ानून में क़ैद

तमाम झूठे सुबूतों
और नकली गवाहों
चालाक वकीलों की
दलिलों के बाद भी
सच और झूठ
गुनाह और बेगुनाह का
मालूम होते हुये भी
जज अन्धे क़ानून से
बेबस और लाचार होकर
संविधान की धाराओं में मज़बूर है
जब अधिकतर इन्सानों का
किसी न किसी रूप में
अदालत से वास्ता पड़ता ही है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

ख़्वाहिशों में क़ैद

अपने ख़्वाबों
और ख़यालों को
आकार और साकार
करने की कशमकश में
हर एक इन्सान
ख़्वाहिशों, तमन्नाओं, मन्नतों
और मनोकामनाओं में क़ैद है

तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

सलाह में क़ैद

ज़िन्दगी और मौत की
कशमकश में हर मरीज
डॉक्टर की दवाई में क़ैद है
जीतने और हारने के
असमंजस में हर मुअक्किल
वकीलों की दलिलों में क़ैद है
हर एक इन्सान
किसी न किसी रूप में
हैरान और परेशान होकर
दुखी और ग़मगीन रहता है
जिसको समाधान के लिये
सलाह की ज़रूरत होती है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
सलाह में क़ैद होकर
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

तन मन की क़ैद

कोई मोटा पतला होकर
शारीरिक अक्षमताओं में क़ैद है
कोई ख़ूबसूरत होकर

बदसूरत होने के डर में क़ैद है
कोई मानसिक विकास से
दिमाग़ी असन्तुलन में क़ैद है
कोई काला गौरा होकर
चमड़ी के रंग भेद से
मोची की नज़र से क़ैद है
कोई नैन नक्श से
अंगों की बनावट से
असन्तुष्ट होकर क़ैद है
कोई बदन से ठिगना
और लम्बा होकर
शारीरिक असन्तुलन में क़ैद है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

चाहत में क़ैद

जब हर कोई
प्रेम का प्यासा है
प्रेम के बिना जीवन
आधा और अधूरा है
सिर्फ़ प्रेम का प्याला ही
नीरस जीवन में
मधुरता का सहारा है
इसलिये हर कोई
प्रेम के अधीन बेबस
और मज़बूर होकर

प्रियतम के प्यार के मोह में
जुदाई और तन्हाई में
विरह की व्याकुल वेदना से
मिलन की आरजू में क़ैद है
तो फिर हर एक
इन्सान का जीवन
एक क़ैदखाना नहीं है तो
और फिर क्या है

यानि कि
हर एक वो इन्सान
जिसमें भी अच्छा बुरा
सोचने समझने की क्षमता है
वो हर एक इन्सान
किसी न किसी रूप में
तन और मन से क़ैद है
सिर्फ़ और सिर्फ़
वो पाग़ल इन्सान ही
जीवन में क़ैद नहीं है
जो अपना मानसिक
और शारीरिक सन्तुलन खोकर
अच्छा और बुरा
सोचने और समझने की
तन मन से क्षमता खो चुका है।

जीवन एक पहेली

ज़िन्दगी हर एक
इन्सान के लिये
अपनी तरह की
अनूठी और उलझी हुई
एक कठिन परीक्षा है
जिसमें हर इन्सान के
अलग अलग तरह से
उलझे हुये सवाल हैं

ज़िन्दगी की परीक्षा में
सफल होने के लिये
हर कोई इन्सान
कोशिश कर रहा है,
सबके प्रश्न
अपनी परेशानी से
अलग अलग होते हैं
सबके सवालों के
जवाब भी तो
अलग अलग ही होंगे

हम कोशिश नहीं करते
जीवन के सवालों को

हल करने के लिये
अपितु नकल करते हैं
सवालों और समस्याओं को
हल करने के लिये
जबकि नकल में भी
अक़्ल की ज़रूरत होती है
इसलिये हम
असफल हो जाते हैं
अपनी ज़िन्दगी की
उलझी हुई कठिन परीक्षा में

निरन्तर असफल
साधना कर्म ही
अनुभव की प्रयोगशाला में
सफलता के आविष्कार से
ज़िन्दगी की कठिन परीक्षा में
सफलता के लिये
चमत्कार के मूल मन्त्र हैं
और चमत्कार को ही
सारी दुनिया का नमस्कार है
इसलिये जिसको भी नमस्कार है
उसका ही संसार पर अधिकार है।

मैं कचरा हूँ

जी हाँ मैं कचरा हूँ
किसी ज़माने में मेरा
स्थाई और सम्मानजनक
ठिकाना हुआ करता था
जिसे आदर, सत्कार
और विरासत से
रेवड़ी कहा करते थे

हर घर परिवार की
अलग अलग रेवड़ी
हुआ करती थी
जहाँ पर घर का कचरा
प्राकृतिक खाद के
विशेष उद्देश्य से
सोच और समझकर
आदर से डालकर
इकट्ठा किया जाता था

जब मैं गोबर, भूसे,
पेड़ों के पत्तों, घास,
फटे पुराने कपड़े
और भी घर के अन्य

सड़ने और गलने वाले
सामानों के रूप में
सड़ और गलकर
खेतों में खाद के
रूप में काम आकर
ज़मीन की उपजाऊ
और पोषण क्षमता में
पर्याप्त और उचित
वृद्धि किया करता था
इसलिये मैं
सहज और सरल होकर
जीवन्त जीवन में कचरा हूँ

तब मेरी उपयोगिता से
मेरी अहमियत थी
इसलिये मुझे मूल्य देकर
खरीदा और बेचा जाता था
इसलिये मुझ कचरे को
धन का दर्जा प्राप्त था
इसलिये इन्सान
मुझ बेकार कचरे को भी
मूल्यवान वस्तु की तरह
सम्भाल कर रखते थे
और नियमित रूप से
मेरी देखभाल किया करते थे

मेरी सार्थक उपयोगिता
और अहमियत को

ध्यान में रखते हुये
मुझ बेकार कचरे की भी
रेवड़ी पूजन के रूप में
मान और सम्मान से
शुभ और मांगलिक अवसरों पर
मांगलिक पूजा की जाती थी
ताकि घर और परिवार में
मेरा महत्त्वपूर्ण स्थान बना रहे
इसलिये मैं
निर्मल और पवित्र होकर
पूजनीय स्थल कचरा हूँ

मगर जबसे
ये डायन प्लास्टिक आयी है
इस डायन ने मेरा जीना
मुश्क़िल कर दिया है
इसलिये मेरा अस्तित्व
ख़त्म होने के कगार पर है

पहले मैं गन्दगी में
सड़ गलकर भी
मेरी अहमियत
और अस्तित्व के
मान और सम्मान
आदर और सत्कार से
मैं तन मन से खुश था
अब तो इस डायन
प्लास्टिक की वजह से

बिना सड़े और गलकर
मेरा दम घुटता है

इस डायन प्लास्टिक ने
ज़हरीली नागिन बनकर
अपने ज़हर से
मुझे इतना विषैला
और प्रदूषित कर दिया है कि
तड़प तड़प कर
मेरी जीवन लीला ही
ख़त्म हो गई है
इसलिये मेरी मूल्यवान
अहमियत के बिना
मेरा आर्थिक अस्तित्व भी
समाज से ख़त्म हो गया है

डायन प्लास्टिक की
नापाक़ करतूतों से
ये सम्पूर्ण संसार जगत
बेहाल और बदहाली से
विनाश और बर्बादी के
कगार पर खड़ा है

अगर इन्सान ने
इस डायन प्लास्टिक को
नियन्त्रित नहीं किया तो
इस डायन की प्रेत आत्मा
विकराल और विनाशकारी

राक्षसी रूप धारण करके
सम्पूर्ण जगत की प्रकृति को
अपने आगोश में जकड़कर
अपने विनाशकारी आंतक से
तहस नहस करके बर्बाद कर देगी।

दलित की ज़ुबानी

हम असहाय दलित
मरे हुये, सड़े गले पशुओं
और मैला ढोकर
सम्पूर्ण समाज को
बीमारियों और गन्दगी से
बचाकर सुरक्षा करते हैं

हम असहाय दलित
कम वेतन में भारी
और कठिन मज़दूरी करके
समाज के घरेलू कामों,
व्यापार, उद्योग, कृषि
और अन्य उत्पादन में
महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं

वफ़ादार, मेहनती
और ईमानदार
होने के बावजूद भी
हम असहाय दलित
हज़ारों सालों से
शोषण के शिकार
बेरहम ज़ुल्मो सितम,

छुआछूत, भेदभाव,
ग़रीबी, भुखमरी, अन्याय
और अत्याचारों को
सहन करना हमारी नियती है

हम असहाय दलितों की
शादी के उत्सव की बारात
घोडी पर नहीं निकल सकती
हम असहाय दलित
तथा कथित धनवान
और इज़्जतदार लोगों के सामने
जूते और चप्पल पहनकर
नहीं निकल सकते
हम अन्य सवर्ण वर्ग के
लोगों से नज़रे मिलाकर
बात नहीं कर सकते
हमें झूठन और भीख माँगकर
भूख और प्यास को
बेबस और लाचार होकर
मज़बूरी में मिटाना पड़ता है

हम असहाय दलितों को
विपरीत और बेरहम मौसम
आँधी और तूफ़ान में भी
दो वक़्त की रोजी रोटी के लिये
बीमार और कमजोर होकर भी
मज़बूरी में काम करना पड़ता है
हमें हमारी बहन बेटियों
और औरतों की इज़्जत आबरू की

छेड़खानी और जबरदस्ती को
जलील और शर्मसार होकर
बर्दाश्त करना पड़ता है

पूरी मेहनत और ईमानदारी से
काम करने के बाद भी
हमें कामचोर, आलसी, मक्कार,
झूठा, चालाक, बेईमान, चोर,
धोखेबाज़, और लापरवाह के
ताने सुनकर सरेआम
तौहीन और जलालत से
जलील होना पड़ता है
भले ही पूरी सत्य निष्ठा से
खतरनाक काम करते वक़्त
हमारी जान ही क्यों न चली जाये

क्या हम बेबस इन्सानों का
दलित के घर में पैदा होना
या फिर ईमानदारी से
मेहनत मज़दूरी करना
हमारा जघन्य अपराध है
क्या हमारे कामों की
समाज के लिये कोई भी
उपयोगिता और अहमियत नहीं है
क्या ये सभ्रान्त समाज
हमारे बिना ठीक तरह से
संचालित हो सकता है
अगर ऐसा नहीं है तो

फिर क्यों ये तथा कथित
धनवान और सभ्रान्त लोग
कर्म को ही पूजा क्यों कहते हैं

हम असहाय दलितों की
उपेक्षाओं और दुर्दशा का फायदा
ईसाइयों, मुसलमानों, सिखों
और बौद्धों ने उठाया
हमें समानता, इज़्जत और
दौलत का लालच देकर
हमारा धर्म परिर्वतन कर
हमें सम्मान का जीवन
जीने का अवसर दिया

हमने धर्म परिर्वतन
लोभ लालच से ज़्यादा
शौषण और अन्याय की
प्रताड़ना से बेहद पीड़ित होकर
मज़बूरी में विवश होकर किया
अन्यथा कौन मूर्ख
हज़ारों साल पुराने
अपने पुरखों के धर्म
और सभ्यता को बदलकर
कोई भी अपनी पहचान,
संस्कार, खान-पान,
रहन-सहन और संस्कृति को
नष्ट करना चाहता है

इस प्रकार तथा कथित
सभ्रान्त और सवर्ण हिन्दुओं ने
हमारी इन्सानियत पर
जुल्म और अत्याचार करके
अपने पैरों पर ख़ुद कुल्हाड़ी मारी
अगर आज हिन्दू समाज
दुर्दशा से दयनीय हालात में हैं तो
इस का ज़िम्मेदार सिर्फ़ और सिर्फ़
स्वंय ख़ुद सवर्ण हिन्दू समाज है

हम असहाय दलितों की
प्रतिभा और काबिलियत,
बहादुरी, ईमानदारी और
मेहनत को चालाक, धूर्त
और अक़्लमन्द अंग्रेजों
और मुसलमानों ने पहचाना
हमारा धर्म बदल कर
हमें सेना में भर्ती करके
हमें हथियारों की तरह
सवर्ण हिन्दुओं के खिलाफ
रंजिश और नफ़रत की
साजिश से इस्तेमाल किया

दाने-दाने को मोहताज
हम असहाय दलितों ने
मामूली वेतन के बदले में
वफ़ादारी का परिचय देकर
मराठों, मुग़लों व नवाबों

और राजा महाराजाओं की
शसक्त और विशाल सेनाओं को
बहादुरी से परास्त किया

वो तो भला हो
बाबा साहेब अम्बेडकर जी का
जिन्होंने आरक्षण का लाभ देकर
हमारा आर्थिक उत्थान करके
हमें समाज में सम्मान जनक
जीवन जीने का अवसर दिया
अन्यथा हम बाकी बचे
अन्य असहाय दलित हिन्दू भी
अन्य कोई भी दूसरा धर्म
मज़बूरी में स्वीकार कर लेते तो
सवर्ण हिन्दू अल्पसंख्यक
और असहाय हो जाते

आरक्षण के लाभ से
जो तथा कथित दलित
अफसर, व्यापारी, राजनेता,
ज़मींदार और उद्योगपति बनकर
और साधन सम्पन्न होकर
तन मन और धन से
ख़ुशहाल हो कर भी
अगर अब इनकी संताने भी
आरक्षण का लाभ लेती है तो
ये आरक्षण की विकृत अवस्था है
अब इस विकृत व्यवस्था में

सम्पन्न दलितों द्वारा
अपने अन्य निर्धन, पिछड़े
और असहाय दलित भाइयों का
जायज़ हित मारकर
पिछड़े असहाय दलितों पर
वैसा ही अन्याय और अत्याचार है
जैसा सवर्ण हिन्दुओं ने
दलितों के साथ किया था
इसलिये दलित समाज की
भलाई इसी में है कि
सम्पन्न दलितों को
आरक्षण के लाभ को
स्वेच्छा से त्याग देना चाहिये
ताकि अपने पिछड़े दलित
भाइयों का विकास को सके।

अजन्मी बेटियाँ

कोख के क़ातिलों की
काली करतूतों से
हम अजन्मी बेटियाँ
जिन्हें बेरहमी से
भ्रूण हत्या करके
कोख में ही
बेरहमी से मार दिया

हमारा क़त्ल करते हुये
इन कोख के क़ातिलों का
कलेजा नहीं पसीजा
जो अपने कलेजे के टुकड़े की
बेरहमी से हत्या कर दी
हमारा क्या कुसूर था
क्या बेटी होना ही
हमारे पाप की सजा
और संगीन अपराध है

हमारे माता-पिता
मौत के सौदागर बनकर
इतने जालिम, हैवान
और शैतान कैसे हो जाते है

जो अपने अंश को ही
बेरहमी से क़त्ल कर देते हैं
धिक्कार और लानत है
ऐसे डरपोक और कायर
गुनहगार माता-पिता पर

क्या हम अजन्मी बेटियाँ
माता-पिता के लिये बोझ थी
क्या हम बेटा बेटी के भेदभाव से
दोयम दर्जे के पालन पोषण से
ज़िन्दा रहने लायक भी नहीं थी
क्या हम बेटियाँ परिवार का
सहारा नहीं बन सकती थी
क्या हम हमारी योग्यता से
परिवार का मान सम्मान
रोशन नहीं कर सकती थी
क्या हमारा जन्म अपशकुन था
क्या हमारे दहेज की चिन्ता थी

अगर ये सब मज़बूरियाँ थी
तब भी हमें जन्म लेने देते
हमें पूरा विश्वास था कि
हम आपको किसी भी रूप में
हताश और निराश नहीं करतीं
घर के कामों में हाथ बँटाती
पढ़ लिख कर परिवार का
नाम और मान रोशन करतीं
हम बेटियाँ तमाम उम्र के लिये

परिवार का सहारा बनकर रहतीं
आपका लायक बेटा भी
शायद इतना कुछ नहीं कर पाता
जितना हम बेटियाँ यक़ीन के साथ
आपको करके दिखा देतीं

हमारा क़त्ल करके ही
ख़ुद अपने हाथों से ही
अपना विनाश कर रहे हो
अपने बेटों के लिये
बहन और बहू
कहाँ से लाओगे
सूनी कलाइयों पर
कौन राखी बाँधेगा
हमारी कमी के असन्तुलन से
सारी दुनिया का सन्तुलन
बिगड़ करके ये दुनिया
तहस नहस हो जायेगी
तो फिर हमारे बिना
कैसे जीवन जी पाओगे।

नदी का नाद

वक़्त में नदी

मैं एक नदी हूँ
रवानी और रफ़्तार से
गतिमान और
चलायमान होकर
मेरे ज़िन्दा होने का
जीवन्त प्रमाण है
लाखों साल पहले भी
मेरा वुजूद था
और आज भी है

इस दौरान
उस नादान, नालायक़
और नासमझ इन्सान की
हज़ारों पीढ़ियाँ
आई और चली गई
जो मेरी रफ़्तार
और रवानी को
ख़त्म करके
मेरे वुजूद को
मिटाना चाहते थे
ख़ुद इन्सान तो

ख़त्म हो गये
मगर मेरे वुजूद को
मिटा न सके

जीवन में नदी

जल ही तो जीवन्त
जीवन होने का कारण है
यह कारण ही तो
मेरे होने का परिणाम है
मेरी विशाल बाँहों के
किनारों को जकड़ना
और मेरी लहरों को पकड़ना
मुश्क़िल ही नहीं
नामुमक़िन होता है
मगर यह नादान, नासमझ
और नालायक इन्सान
यह सब कहाँ समझता है

मेरी शराफ़त
और इन्सानियत
मेरे रहम और करम से
मेरे शान्त और
उपजाऊ किनारे
जीवन की रेखा बनकर
अगर जीव जन्तुओं की
ख़ुशहाल आबादी है तो
मुझ पर अत्याचारों से
बाढ़ की विनाश लीला से
जीवन की दुर्दशा और तबाही है

ममता में नदी

बिना किसी धर्म जाति
अमीरी और ग़रीबी के
उच नीच के भेदभाव से
सभी जीव जन्तुओं की
प्यास को बुझा कर
ममता, करुणा और स्नेह से
सहज और सरल होकर
मैं प्राकृतिक और
स्वाभाविक माँ हूँ

मोक्ष में नदी

श्रापों से मुक्त कर
मैं पवित्र भागीरथी हूँ
गंगा पुत्र भीष्म की
प्रतिज्ञा का मैं प्रण हूँ
पितरों के प्राणों का
मैं अर्पण और तर्पण हूँ
सांसारिक मोहमाया से
भव सागर को
पार कराने वाली
मोक्ष दायनी भी मैं ही हूँ

अर्जुन को दिये उपदेश में
जल का उद्गम
और गतिमान प्रवाह होकर
गीता के ज्ञान में भी मैं ही हूँ

राम की मुक्ति के लिये
सरयू नदी का सफ़र होकर
मोक्ष का मार्ग भी मैं ही हूँ

शपथ में नदी

जन सामान्य के वादों,
रस्मों, कसमों और वचनों से
शपथ और सौगन्ध में
प्रतिज्ञा और प्रण से
वचन भी तो मैं ही हूँ

ऋषि मुनियों
और सन्यासियों के
तप, त्याग और तपस्या से
साधना के कमण्डल का
अभिमन्त्रित जल होकर
वरदान और श्राप में भी
मैं ही तो परिणाम हूँ

ईश्वर में नदी

बाल कृष्ण की
जल क्रिड़ाओं के
निर्मल आनन्द में
रास रचियता होकर
निवस्त्र गोपियों की
लज्जा भी तो मैं ही हूँ

उफ़नती और
तूफ़ानी लहरों का
कृष्ण के चरण स्पर्श करके
शान्त लहरें भी तो मैं ही हूँ

विष्णु और लक्ष्मी के
क्षीर सागर का भी
मैं ही तो विश्राम हूँ

शंकर की जटाओं में
अपने वेग और प्रवाह को
निर्मलता, सरलता
और सहजता से समाकर
महादेव के शीर्ष में भी
मैं ही तो सरताज़ हूँ

इसलिये मैं नदी
निर्मल और पवित्र होकर
ईश्वर के निवास में भी
मैं ही तो साकार हूँ

जीवन सफ़र में नदी

गर्भ धारण होकर
भ्रूण का माँ के रक्त से
नौ महीने तक पोषण लेकर
माँ के स्तन से दूध पीकर
ममता के आँचल में
प्यार और करूणा का
सागर भी तो मैं ही हूँ

निर्मल और निश्छल
बचपन की शरारत के
नटखट जीवन की
शान्त और सुगम
लहरें भी तो मैं ही हूँ

यौवन और जवानी के
जोश और जुनून के
तूफ़ान और उफ़ान से
मचलती लहरें भी तो मैं ही हूँ

परिपक्व उम्र के
सामाजिक जीवन में
अनुभव और ज़िम्मेदारियों से
तालाब और झील के समान
गृहस्थ जीवन के जैसे
शान्त ठहराव और भराव से
कर्त्तव्य की गहराई भी तो मैं ही हूँ

जन्म के बाद में
प्रथम स्नान से
और मृत्यु के बाद में
अन्तिम स्नान से
इस प्रकार इन्सान के
सम्पूर्ण जीवन काल में
जीवन्त होकर मैं ही तो हूँ

दुख सुख में नदी

जीवन की ख़ुशियों के
उत्साह और उमंग के
आदर और सत्कार के
चाय पानी, कोल्ड ड्रिंक्स के
रस्मों और रिवाज़ से
जश्न भी तो मैं ही हूँ

दुख दर्द और ग़मों से
अपने आपको बेख़बर करके
मधुशाला की महफ़िल में
मधुर रस की मस्ती
और सुरूर भी तो मैं ही हूँ

इस प्रकार इन्सान के
सम्पूर्ण जीवन की
ख़ुशियों और ग़मों में
एक मात्र सहारा मैं ही तो हूँ

प्रकृति में नदी

पानी और ज़मीन के
अन्दरूनी पोषण से
फूलों की हसीन रंगत
और महकती ख़ुश्बू से
सावन और बसन्त में
चमन की बहार होकर
हर पौधा भी तो मैं ही हूँ

पेड़ों के फल, हरियाली
और शीतल छाया में
आराम और विश्राम से
तन और मन का
चैन और सुक़ून होकर
सभी पेड़ मैं ही तो हूँ

पत्तों और फूलों की
सतरंगी पँखुड़ियों,
घास और कलियों के
नाज़ुक बदन पर
मोतियों की तरह चमकती
बूँद-बूँद शबनम का
वुज़ूद भी तो मैं ही हूँ

नील गगन में
रिमझिम बारिश से
सतरंगी इन्द्रधनुष बनकर
ख़ूबसूरत और हसीन
नज़ारा भी तो मैं ही हूँ

इस प्रकार सभी
जीव जन्तुओं के लिये
प्रकृति के सम्पूर्ण आनन्द का
चैन और सुक़ून मैं ही तो हूँ

मान सम्मान में नदी

तन और मन में
शर्मो हया के गहनों से
अपने आपसे भी शरमाकर
लाज और शर्म से
पानी-पानी होकर
लज्जा भी तो मैं ही हूँ

इज़्जत और आबरू,
मान और सम्मान
और अस्मत को लुटाकर
बेशर्म और बदनामी से
शर्मसार और ज़लील होकर
चुल्लू भर पानी में डूबकर
ख़ुदकुशी से बेमौत
मरना भी तो मैं ही हूँ

बेदर्दी, बेईमान, बेवफ़ा,
ख़ुदग़र्ज़, चालाक, मक्कार,
मासूम, बेख़बर, नालायक,
शैतान, नादान और नासमझ को
पानी पी पी के कोसकर
याद करना भी तो मैं ही हूँ

जब बिना आब आबरू नहीं
इसलिये सभी स्त्री पुरुषों के
सम्पूर्ण आचार विचार में
सिर्फ़ और सिर्फ़ मैं ही तो हूँ

विरह में नदी

मिलन की आरज़ू से
जुदाई और तन्हाई में
विरह की व्याकुल वेदना से
बेसब्र बेबस इन्तज़ार में
बेक़रार लम्हों के
दर्द और ग़मों से
बहते हुये आँसुओं की
धारा भी तो मैं ही हूँ

इश्क़ आग का दरिया है
और तैरकर जाना है
मुहब्बत में महबूब की
बेहिसाब चाहत से
उफ़नती जुदाई की
तूफ़ानी ज्वाला की लपटें
और लहरें भी तो मैं ही हूँ

शरीर में नदी

तीन चैथाई ज़मीन में
बेशुमार पानी से समन्दर है
जिसमें अरबों खरबों
अनगिनत जीव जन्तु हैं
जिनके जीवन को
पानी के पोषण से
जीवन्त रखकर
खरबों जीव जन्तुओं में
सिर्फ़ मैं ही तो जीवन हूँ

शरीर की नसों
और धमनियों में
जीवन का संचार होकर
रक्त के रूप में बहकर
रक्त की धारा में भी तो
मैं ही तो चलायमान हूँ

मौसम में नदी

भाप और बर्फ़ से
आकार बदल कर
सर्दी और गर्मी के
मौसम भी तो मैं ही हूँ

पुरवाई घटाओं में
बादलों की रंगत से
बारिश भी तो मैं ही हूँ

राग मेघ मल्हार की
राग और रागनियों
सुर और ताल से
गले में सधे हुये सुरों से
बारिश भी तो मैं ही हूँ

रोज़गार में नदी

जल परिवहन से
करोड़ों मल्लाहों
जलीय जीव जन्तुओं के

व्यापार से नागरिकों
और मछुआरों के
जीवन यापन का
माध्यम बनकर
रोज़गार भी तो मैं ही हूँ

सीमाओं में नदी

किसी भी गाँव, शहर,
राज्यों और देशों को
एक दूसरे से
प्राकृतिक रूप से
और स्थाई रूप से
पृथक करने की
सीमाओं की निर्विवादित
सीमा भी तो मैं ही हूँ

अगर मैं दो स्थानों को
स्थाई रूप से अलग करने की
प्राकृतिक सीमा हूँ तो
दो स्थानों को जोड़ने का
माध्यम भी तो मैं ही हूँ

अर्थ व्यवस्था में नदी

ज़मीन से पानी का
अंदरूनी पोषण लेकर
सभी प्रकार की
फ़सलों की उपज से
अन्न उत्पन्न होकर
सभी जीवों की भूख मिटाकर

किसान की ख़ून पसीने की
मेहनत से आर्थिक विकास में
सभी फ़सलें मैं ही तो हूँ

आदि अनादि काल से
आवागमन और व्यापार का
सबसे सस्ता और आरामदायक
सफ़र का मार्ग होकर
अर्थ व्यवस्था भी तो मैं ही हूँ

खनिज तेल पेट्रोल,
डीज़ल और केरोसिन से
ईंधन के रूप में जलकर
गति भी तो मैं ही हूँ

पानी से बिजली बनकर
प्रकाश, ऊर्जा
और ऊष्मा होकर
देश को गति देने वाला
विकास भी तो मैं ही हूँ

सत्कार में नदी

थनों से दूध की
धार बनकर
जन-जन के
लोकप्रिय पेय से
आदर और सत्कार
मान और सम्मान में
चाय भी तो मैं ही हूँ

सुविधा शुल्क में नदी

खाना-पीना, दाना-पानी
और चाय-पानी की
टपकती लालची लार से
नाजायज़ को जायज़ करने में
रिश्वत की उफ़नती
और तूफ़ानी दरिया में
गैर क़ानूनी कश्ती को
किनारे पर लगाने का
सुविधा शुल्क भी तो मैं ही हूँ

भूख प्यास में नदी

जिन इन्सानों के
जल के जीव जन्तु
मुख्य भोजन होते हैं
उनकी भूख भी तो मैं ही हूँ

पानी के दो बूँद के बिना
प्यास से दम तोड़ते हुये
बेबस प्यासे के लिये
अमृत से भी बढ़कर
ज़िन्दगी भी तो मैं ही हूँ

मेहनत और ईमानदारी से
बहते ख़ून और पसीने में
दो वक़्त की रूखी-सूखी
रोजी और रोटी होकर

मज़बूर पापी पेट का
ज़िन्दा सवाल भी तो मैं ही हूँ

हिम शिखर में नदी

बर्फ़ीले पर्वतों से
बूँद-बूँद रिसकर
झील और झरनों के
रूप में बहकर
पृथ्वी से भी
तीन गुना ज़्यादा
विशाल और गहरा
समंदर भी मैं ही तो हूँ

ज़मीन में नदी

कुओं और बावड़ियों में
ज़मीन से बूँद-बूँद रमकर
पनिहारिन की गागर में समाकर
जीवन की हर ज़रूरत बनकर
घर से पनघट की डगर में
औरतों के सुख-दुःख की
बातचीत भी तो मैं ही हूँ

उम्मीद में नदी

रोजी-रोटी की तलाश में
बेटा दूर-दराज परदेश में
बीघा दो बीघा ज़मीन में
पानी के बिना अकाल में

पीढ़ियों से कर्ज़ के
कुचक्र से दल-दल में
फँसे निर्धन और बेबस
बूढ़े किसान माँ-बाप के
खेत में खड़ी फ़सल की
उम्मीद भी तो मैं ही हूँ

आस्था में नदी

जल और दूध से
ईश्वर के अभिषेक से
ईश्वर की आराधना,
माखन मिश्री के पंचामृत से
ईश्वर का प्रसाद,
तुलसी चरणामृत से
ईश्वर के आशीर्वाद में
ईश्वर के आकार का
निराकार और साकार रूप में
मैं ही तो विराजमान हूँ

आस्था और विश्वास में
मुझ में स्नान करने से
पाप और गुनाह धुल जाते हैं
इस प्रकार मन से हुये
निर्मलता के हृदय परिवर्तन में
प्रायश्चित में भी, मैं ही तो हूँ

मरणासन्न इन्सानों को
दो बूँद गंगा जल की पिलाकर

सांसारिक मोहमाया से मुक्त कर
शान्ति पूर्ण देह त्याग से
मोक्ष की मृत्यु भी तो मैं ही हूँ

महाप्रसादी में गंगा जल की
रसोई भी तो मैं ही हूँ

प्रकाश में नदी

तेल की धार बनकर
चराग़ों के साथ जलकर
अन्धकार को दूर करने वाली
रोशनी भी तो मैं ही हूँ

नाली में नदी

घरों का बेकार
और गन्दा पानी
नाली से नाला बनकर
मेरे अस्तित्व में समाकर
गन्दे पानी के अवशेष में
गन्दगी भी तो मैं ही हूँ

खेल में नदी

जोश और जुनून में
रवानी और रफ़्तार से
नौका और तैराकी प्रतियोगिता में
हार और जीत के संघर्ष का
रोमांच भी तो मैं ही हूँ

चमत्कार में नदी

राम सेतु के निर्माण में
विशाल और भारी भरकम
पत्थरों का पानी में तैरना
आस्था और विश्वास में
चमत्कार भी तो मैं ही हूँ

निर्माण में नदी

रेत, गिट्टी, चूना
और सीमेन्ट के साथ
मिश्रण में मिलकर
निर्माण की तराई करके
लम्बी चौड़ी सड़कों,
विभिन्न प्रकार के पुलों,
ऊँचे ऊँचे विशाल भवनों की
मज़बूती भी तो मैं ही हूँ

लेन देन में नदी

समस्त संसार जगत को
भव सागर पार कराने वाले
स्वयं राम के साथ केवट के
लेन-देन की चतुराई और
चालाकी भी तो मैं ही हूँ।

ख़ुदग़र्ज़ी में नदी

ख़ुदग़र्ज़ी की सोच समझ से
दिखावे की बनावटी दरिया में
चापलूसी की मतलबी दुनिया में
मगरमच्छ के आँसू भी तो मैं ही हूँ

तीर्थ में नदी

बिना स्नान के
सारे तीर्थ अपूर्ण हैं
इसलिये हर एक तीर्थ में
एक मैं ही तो साक्षात तीर्थ हूँ

सुहागन में नदी

सावन का सोमवार
करवा चौथ का त्यौहार
गणगौर के सोलह शृंगार
और सावन की तीज में
सुहागन का सिंदूर होकर
निर्जल व्रत और उपवास में
निर्मल और पवित्र होकर
कठिन साधना भी तो मैं ही हूँ

प्रेम की भक्ति में नदी

भक्ति रस की दरिया से
मन मंदिर के सागर में
मीरा के ज़हर के प्याले में
सहज और सरल होकर
मौत का ज़िंदगी बनकर
प्रेम दीवानगी भी तो मैं ही हूँ

इस प्रकार सम्पूर्ण संसार में
आदि अनादि काल से मैं ही
उद्गम, अंत और अनंत हूँ।